JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का उनकी उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

डॉ.कश्मीर सिंह'
व्याख्याता, शारीरिक शिक्षा विभाग,
विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
भोपाल (मध्य प्रदेश)

सारांश :

प्रस्तुत शोधपत्र में शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का उनके उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में हमने भोपाल शहर के 16 शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों से 70 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें 35 शिक्षक एवं 35 शिक्षिकाओं का समूह है। आंकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में मूल्यों के मापन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं उपलब्धि के मापन के लिए पूर्व कार्य अनुभव को प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। तथा शिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में उच्च स्तर का सार्थक सह–सम्बन्ध है। इससे यह परिणाम प्राप्त होता है कि मूल्यों का उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस शोध कार्य से यह सत्यापित होता है कि उच्च मूल्यों से उच्च उपलब्धियों को हासिल किया जा सकता है।

मुख्यबिन्दु :– शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं, मूल्य, उपलब्धि, शारीरिक शिक्षा।

प्रस्तावना :–

शारीरिक शिक्षा, शिक्षा ही है। यह वह शिक्षा है जो बालक के सम्पूर्ण तथा उसकी शारीरिक प्रतिक्रियाओं द्वारा उसके शरीर, मन एवं आत्मा के पूर्णरूपेण हेतु दी जाती है। शारीरिक शिक्षा का लक्ष्य प्रत्येक बालक को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से तन्दुरूस्त बनाना और उसमें व्यक्तिगत व सामाजिक गुणों का विकास करना होना चाहिए ताकि वह लोगों के साथ खुशी से रह सके और स्वयं को एक अच्छा नागरिक महसूस कर सके।

मानव जीवन में अनेक प्रकार की परेशानियाँ और तनाव हैं। लोग विभिन्न प्रकार की चिंताओं से घिरे रहते हैं। खेल–कूद हमें इन परेशानियों, तनावों एवं चिंताओं से मुक्त कर देती हैं। खेल कूद को जीवन का आवश्यक अंग मानने वाले जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना करने में सक्षम होते हैं।

संत रामकृष्ण परमहंस का कथन है कि ईश्वर ने संसार की रचना खेल–खेल में की है। अर्थात् परमात्मा को खेल बहुत पसंद है। तो फिर परमात्मा की कृति मनुष्य खेलों से क्यों दूर रहे! खेल खेलकर ही लोग जान सकते हैं कि जीवन एक खेल है। जीवन को बहुत गंभीर और तनावयुक्त नहीं बनाना चाहिए। सभी हँसते–खेलते जिएँ तो संसार की बहुत सी परेशानियाँ मिट जाएँ। अतः जीवन में खेल–कूद का महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए।

खेल–कूद स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। ये शरीर के विभिन्न अंगों के उचित संचालन में मददगार होते हैं। खेलने से शरीर को व्यायाम होता है। तथा पसीने के रूप में शरीर में जमा जल बाहर निकल आता है। खेल–कूद शरीर और मन में ताजगी लाता है। इनसे मांसपेशियाँ सुगठित हो जाती हैं। मन की ऊब मिटाने और चित्त में प्रसन्नता लाने के लिए खेलों की जितनी भूमिका है उतनी शायद अन्य किसी चीज़ की नहीं। यही कारण है कि अलग–अलग समाज में देश में विभिन्न प्रकार के खेलों को प्र्याप्त महत्व दिया जाता है।

विद्यायालयों तथा अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों में शारीरिक शिक्षा को शिक्षा का एक आवश्यक अंग माना जाता है। खेलों से संबंधित अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। विद्यालयों में वार्षिक खेल समारोह होते हैं। हर दिन एक घंटी खेल घंटी होती है। खेल–प्रशिक्षक इस घंटी में बच्चों को तरह–तरह के खेल खेलना सिखाते हैं। बच्चे उत्साहित होकर खेलते हैं तथा तनाव से मुक्त होकर पुनः पढ़ाई में ध्यान केंद्रित करते हैं।

मूल्य :–

'मूल्य' शब्द का प्रयोग व्यक्ति की अभिरूचि तथा प्रेरणाओं के मापन हेतु किया जाता है। मूल्य का सम्बन्ध व्यक्ति के विचार, दृष्टिकोण तथा उससे सम्बंन्धित व्यवहार एवं कार्य से होता है। मूल्य जिसमें लोग रूचि रखते हैं, वे अनुगृहित, सम्मान सूचक पदवीं और आनंदित होने की इच्छा रखते हैं। मूल्य का तात्पर्य किसी व्यक्ति के उस गुण से है जो उसे उपयोगी, महत्वपूर्ण तथा सम्माननीय बनाता है। इस प्रकार मूल्य व्यक्ति के आंतरिक तथा बाह्य दोनों गुणों को व्यक्त करता है। ज्ञान के प्रकाश में की गयी मानवीय क्रियायें तथा मानवोचित जीवन लक्ष्यां को ही मूल्य की संज्ञा दी जा सकती है।

'मूल्य' पद विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है। इस पद की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है जूल्स हैनरी इसे कुछ ऐसे परिभाषित करते हैं कि हम इसे प्यार, दयालुता, शान्ति, संतुष्टि, हास्यता, ईमानदारी, सज्जनता, आरामदायक, सादगी के रूप में मानते हैं। **एम. टी. राम जी के अनुसारः–** मूल्य का अर्थ है वह जो अभीष्ट है। मूल्यों को जीवन के ऐसे मार्गदर्शक सिद्धांत कहा जा सकता है जो व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ सामाजिक कल्याण एवं समायोजन में सहायक हैं और जो संस्कृति के अनुरूप होते हैं।

विद्यालय में प्रार्थना स्थल होता है जहाँ विद्यार्थियों को आत्मानुशासन, मौन, ध्यान, लय एवं उचित गति से गायन में दीक्षित किया जाता है। प्रार्थना मानव मन व ह्रदय में श्रद्वा–भक्ति का संचार करती है। मूल्यों के विकास में खेलकूद की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। खेल में छात्र अपनी स्वतंत्रता का आनंद उठाते हैं। शारीरिक शिक्षा के माध्यम से सत्य बोलने, सहयोग, प्रेम, अहिंसा, सहनशीलता, अनुशासन, भ्रातृत्व, समानता, टीम भावना आदि मूल्यों को विकसित करने में समर्थ होते हैं। शारीरिक व्यायाम तथा योग क्रियाओं के माध्यम से स्वास्थ्य, सहयोग, व्यवस्था, सौंदर्यबोध, सहिष्णुता, शालीनता आदि मूल्य विकसित किये जा सकते हैं।

उपलब्धि :–

उपलब्धि से तात्पर्य है, शिक्षार्थी को किसी क्षेत्र में शिक्षक द्वारा प्रदत्त निर्देशों के द्वारा कितनी मात्रा में लाभान्वित होता है, अर्थात् किसी व्यक्ति की उपलब्धि उस मात्रा के द्वारा प्रकट होती है, जिस मात्रा में वह प्रदान किये जाने वाले प्रशिक्षण के द्वारा ज्ञान अथवा कौशल का उर्पाजन करता है। **राबिनसन व हरलॉक** ने उपलब्धि की परिभाषा इस प्रकार दी है, "व्यक्ति के सीखने और जो सीखा है, उसे कार्यान्वित करने की स्थिति या स्तर ही उपलब्धि है।" उनके अनुसार, "उपलब्धि केवल ज्ञान या निपुणताओं की प्राप्ति ही नहीं है अपितु दृष्टिकोण, रूचि और मूल्य भी उपलब्धि के स्वरूप हैं। उपलब्धि, सीखने के दृष्टिकोण और रूचि का परिणाम है, क्यों कि ये उपलब्धि की सीमा को प्रभावित करते हैं।" "उपलब्धि का अर्थ है पूर्णता प्राप्ति। उपलब्धि शिक्षा का सबसे पहला और महत्वपूर्ण लक्ष्य है। शिक्षा देने की प्रक्रिया में केन्द्रबिन्दु विद्यालयों और महाविद्यालयों के विषय में विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करना है। शिक्षित लोगों की उपलब्धियां ही शिक्षा के परिणाम कहे जा सकते हैं।"

शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली पीढ़ी पर अपना प्रभाव डालती है। शिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लांघकर विश्व–व्यवस्था तथा मानव–जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है। मानव–समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर निर्भर है। शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक की उपयोगिता को चुनौती नहीं दी जा सकती है। शिक्षक शिक्षा को अपने में आत्मसात करके एक नया व्यक्तित्व का सृजन करता है। व्यक्तित्व ही हमेशा व्यक्तित्व को प्रभावित कर सकता है। शिक्षक हमेशा अपने व्यक्तित्व से विद्यार्थियों को प्रभावित करके उनका रूपान्तर कर देता है। **हुमायूं कबीर का कथन है** "शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा–पद्धति का भी असफल होना अवश्यम्भावी है। अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा–पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।" माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लिखा है "अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निमाण में सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक–उसके व्यक्तिगत गुणों, उसकी शैक्षिक योग्यताएं, उसका व्यवसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति जो वह विद्यालय तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निःसन्देह रूप से शिक्षकों पर निर्भर है जो कि उस विद्यालय में कार्य कर रहे हैं।"

पूर्व शोध कार्य :–

एम.के. सिंह ने "प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों व शिक्षिकाओं के मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन" किया है। जिनका उद्देश्य शिक्षिकों व शिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। तथा उन्होंने न्यादर्श के रूप में आगरा शहर के 21 से 35 आयु वर्ग के 350 अध्यापक व 350 अध्यापिकाओं का चयन यादृच्छिक चयन विधि से किया गया है उन्होने पाया कि शिक्षक व शिक्षिकाओं के आर्थिक एवं सामाजिक मूल्य प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है। शिक्षिकाओं की अर्थ सम्बन्धी वरीयता अधिक है जबकि शिक्षकों की सामाजिक कार्यों में अधिक रूचि पायी गई और शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शिवरामकृष्णन व नागेश्वरन् ने 156 उच्च व निम्न उपलब्धि प्राप्त विश्वविद्यालय स्तर की महिला कबड्डी खिलाड़ियों के मध्य स्व–प्रत्यय, आत्म–विश्वास, संज्ञानात्मक चिन्ता, प्रतियोगिता पूर्व चिन्ता व दैहिक चिन्ता चरों का मापन किया और पाया कि स्व–प्रत्यय, आत्म विश्वास और संज्ञानात्मक चिन्ता में विश्वविद्यालय स्तर की उच्च व निम्न उपलब्धि प्राप्त महिला खिलाड़ियों में सार्थक अंतर था। जबकि प्रतियोगिता पूर्व चिन्ता व दैहिक चिंता के मध्य निम्न व उच्च उपलब्धि प्राप्त महिलाओं ने कोई सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं किया।

कोथरान ने पाया कि शारीरिक शिक्षा के शिक्षक का ध्यान उनके मूल्य अभिविन्यास पर ही केन्द्रित नहीं रहता है, बल्कि साथ ही उसमें अधिगम तथा सामाजिक जिम्मेदारी पर भी ध्यान केन्द्रित रहता है। उन्होने आगे सुझाव दिया कि शारीरिक शिक्षक मूल्य अभिविन्यास से भी आगे उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। शिक्षक को अपने दृष्टिकोण में दो व दो से अधिक मूल्य अभिविन्यास को सम्मिलित करना चाहिए।

समस्या कथन :– "शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का उनकी उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य :–

- शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों की मूल्यों का उनके उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ:–

- शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

अध्ययन का न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भोपाल शहर के 16 शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों से 70 शिक्षकों को लिया गया। जिसमें 35 शिक्षक तथा 35 शिक्षिकाऐं है।

शोध विधि :–

इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध कार्य में प्रयुक्त्व चर :–

- **स्वतन्त्र चर–** मूल्य, शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं एवं उपलब्धि
- **आश्रित चर –** उपलब्धि

शोध कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

शोध कार्य में आंकड़ों के संकलन के पश्चात् उनका परिणाम निकालने के लिए निम्न सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी टेस्ट
- सह–सम्बन्ध

शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण :–

आंकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में मूल्यों के मापन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं उपलब्धि के मापन के लिए पूर्व कार्य अनुभव का प्रयोग किया गया।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण :–

परिकल्पना :–1

शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तलिका क्रमांक :– 1 शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मूल्य सम्बन्धित 'टी' परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
शिक्षक	35	66.34	4.34	1.56
शिक्षिकाऍं	35	65.64	5.98	

सारणी क्रमांक :– 1 से यह ज्ञात होता है कि शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का मध्यमान 66.34 व 65.64 पाया गया तथा उनका मानक विचलन 4.34 व 5.98 पाया गया। दोनों समूह के बीच भज मान 1.56 पाया गया। जो सारणी मान से कम है। अर्थात् हमारी परिकल्पना "शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" स्वीकृत होती हैं। दोनों समूह में सार्थक अंतर नहीं है।

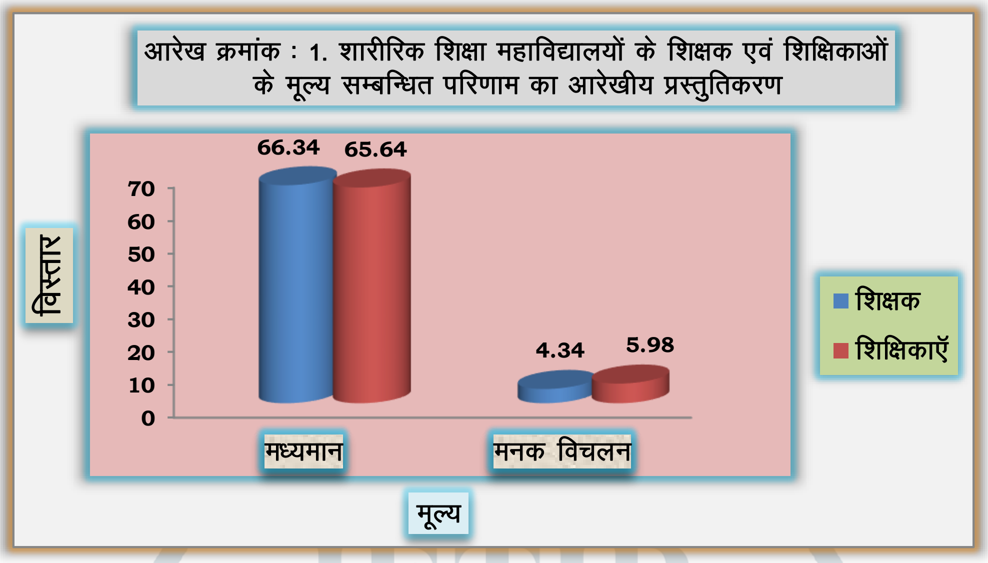

निष्कर्ष :– उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना :– 2

शारिरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तलिका क्रमांक :–2 शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के उपलब्धि सम्बन्धित 'टी' परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
शिक्षक	35	70.6	5.78	4.23
शिक्षिकाएँ	35	68.12	8.23	

सारणी क्रमांक :– 2 से यह ज्ञात होता है कि शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के उपलब्धि का मध्यमान 70.6 व 68.12 पाया गया तथा उनका मानक विचलन 5.78 व 8.23 पाया गया। दोनो समूह के बीच भज मान 4.23 पाया गया जो सारणी मान से ज्यादा है। अर्थात् हमारी परिकल्पना "शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत होती है। दोनों समूह में सार्थक अन्तर है।

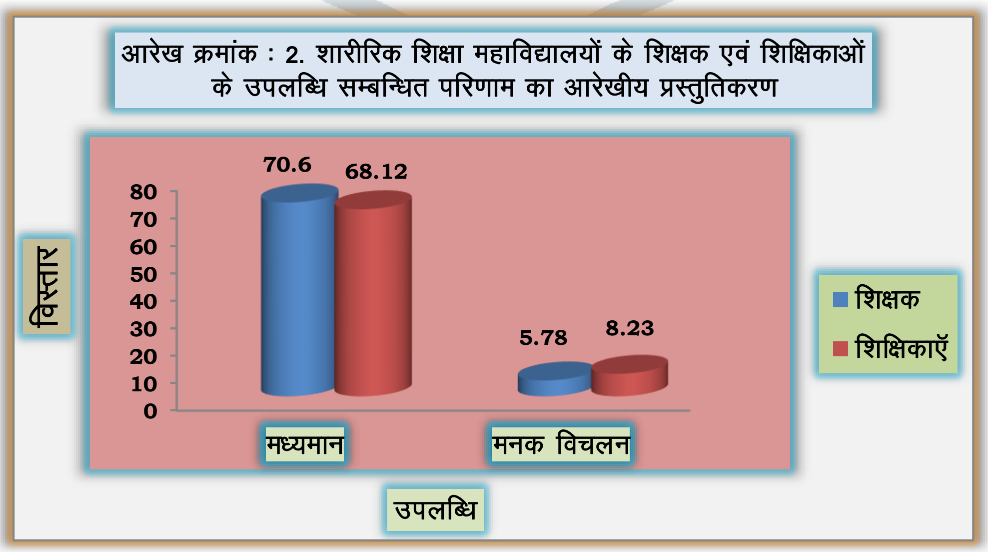

निष्कर्ष :–

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना :– 3

शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

तलिका क्रमांक :– 3 शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि के सह–संबंध संबंधित परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	सह–सम्बन्ध
मूल्य	70	66.34	.786
उपलब्धि		65.64	

सारणी क्रमांकः 3 से यह ज्ञात होता है कि शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि का मध्यमान 66.34 व 65.64 पाया गया। दोनों समूह के बीच सह–सम्बन्ध .786 पाया गया। अर्थात् हमारी परिकल्पना "शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।" अस्वीकृत होती है। दोनों समूह में उच्च स्तर का सार्थक सह–सम्बन्ध है।

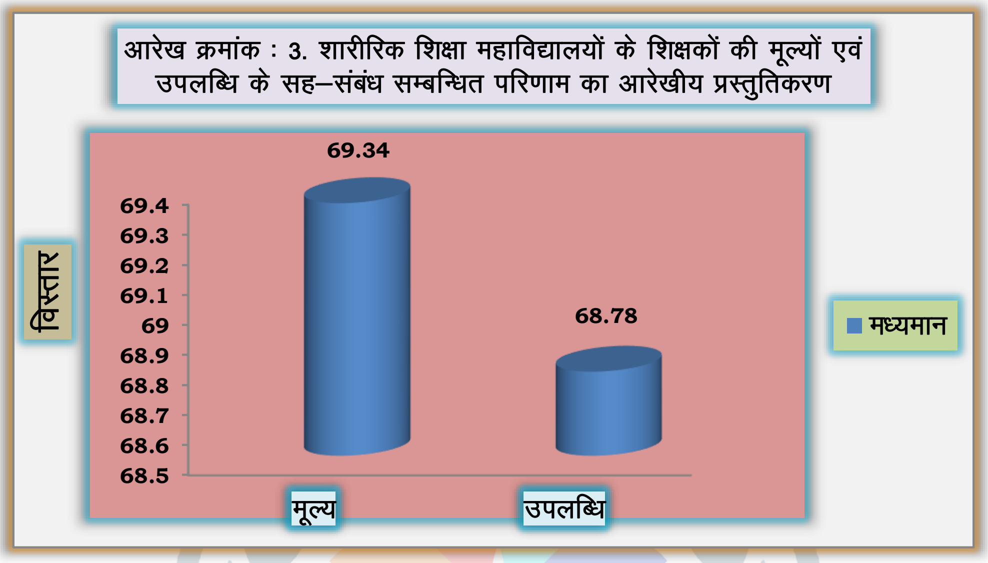

निष्कर्ष :–

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में उच्च स्तर का सार्थक सह–सम्बन्ध है।

परिणाम :–

खेल–कूद का व्यक्तित्व के विकास मे बहुत योगदान है। इनसे शारीरिक एवं मानसिक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। खुले मैदानों में होने वाले खेल खेलकर व्यक्ति स्वस्थ बना रह सकता है। खुली ताजी हवा फेफड़ों में अधिक प्रवेश करती है। व्यक्ति निरोगी रहता है। उसकी झिझक मिटती है, वह समाजोपयोगी कार्यों में सहभागिता करता है। आजकल अच्छे खिलाड़ियों को बहुत सम्मान प्राप्त है। उसे धन भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। सरकार एवं निजी संस्थाएँ उन्हें अपने यहाँ अच्छी नौकरी पर रखती हैं। समाज में उन्हें उचित आदर मिलता है। उपर्युक्त कारणों से खेल–कूद का महत्व दिनो–दिन बढ़ता जा रहा है। सरकार एवं खेल–संगठन खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्रयत्नशील हैं। बालकों, बालिकाओं तथा युवाओं को प्रतिदिन कोई न कोई खेल अवश्य खेलना चाहिए। जब देश के बच्चे और युवा स्वस्थ रहेंगे तो देश के निर्माण में बहुत सहायता मिलेगी। खेलों से व्यक्तियों में जिन मूल्यों का विकास होता है उससे वह उच्च उपलब्धियों को हासिल करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- शिन्द बी.एस. (2012): **"शारीरिक शिक्षा के सिद्धांत, इतिहास तथा मनोविज्ञान"**, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- भट्ट अल्ताफ हसैन (2010): **"शारीरिक शिक्षा में पाठ्यक्रम रूपांकन"**, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- थानी योगराज (2009): **"शारीरिक शिक्षा और खेल मनोविज्ञान"**, खेल साहित्य पब्लिश केन्द्र।
- धनन्जय शाह (2008): **"शारीरिक शिक्षा में सांख्यिकी"**, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- सिंह आर. पी., कुमार सुनील, कुमार योगेश (2012): **"शारीरिक शिक्षा"**, खेल साहित्य पब्लिश केन्द्र।
- शर्मा सुनीता (2008): **"शारीरिक शिक्षा के विविध आयाम"**, राजपूत पब्लिकेशन्स।
- रामललित (2009): **"शारीरिक शिक्षा में आधुनिक प्रवृत्तियाँ"**, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।